कक्षा - 12

समकालीन विश्व राजनीति

अध्याय - 5

समकालीन विश्व में सुरक्षा

भाग - 5

Satyaveer Yadav

खतरे का एक और वैश्विक स्त्रोत - निर्धनता

- अनुमान है कि अगले 50 सालो में दुनिया के सबसे गरीब देशों में जनसंख्या तीन गुनी बढ़ेगी।
- जबकि इसी अवधि में अनेक धनी देशों की जनंसख्या घटेगी।

- प्रति व्यक्ति उच्च आय
  जनसंख्या की कम वृद्धि
  ↓
  धनी बनने में मदद

- प्रति व्यक्ति निम्न आय
  जनसंख्या की तीव्र वृद्धि
  ↓
  गरीब बनाते हैं।

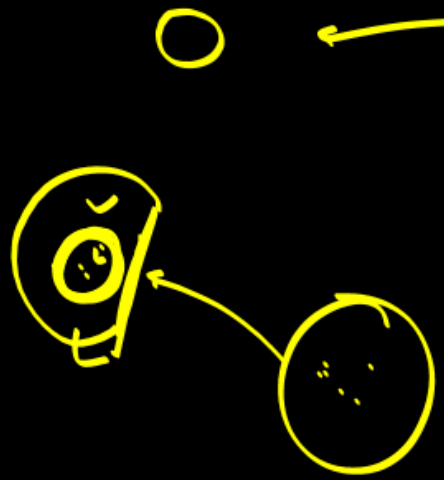
- विश्वस्तर पर यह असमानता उत्तरी गोलार्द्ध के देशों को दक्षिणी गोलार्द्ध से अलग करती है।

उत्तरी गोलार्द्ध

- अच्छे जीवन की तलाश में लोगों का यहां आना लगातार जारी

दक्षिणी गोलार्द्ध

- असमानता बढ़ी
- कुछ देशों ने आबादी की रफ्तार पर काबू किया, पर कुछ ऐसा नहीं कर पाये।



आप्रवासी :- जो अपनी मर्जी से स्वदेश छोड़ते हैं।

शरणार्थी :- जो युद्ध, प्राकृतिक आपदा अथवा राजनीतिक उत्पीड़न के कारण स्वदेश छोड़ने को मजबूर होते हैं।

सामान्य उम्मीद :- कोई राज्य शरणार्थी को स्वीकार करेगा लेकिन उन्हें आप्रवासियों को स्वीकारने की बाध्यता नहीं है।

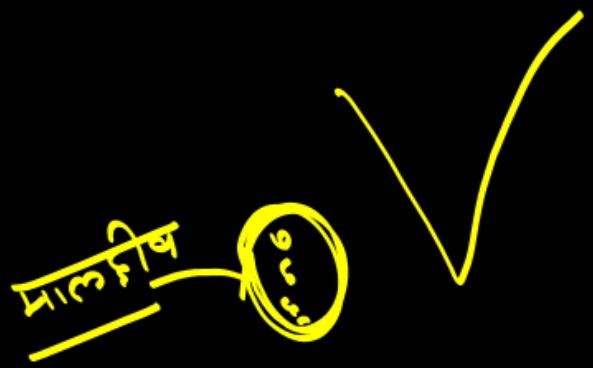
- 1990 से 1995 के बीच सत्तर देशों के मध्य कुल 93 युद्ध हुए और इसमें लगभग साढ़े 55 लाख लोग मारे गये।
- इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति, परिवार और कभी कभी पूरे समुदाय को सर्वव्याप्त भय, आजीविका, पहचान और जीवन यापन के परिवेश के नाश के कारण जन्मभूमि छोड़ने पर मजबूर होना पड़े।



खतरे का स्त्रोत - महामारियाँ -

- एचआईवी - एड्स, बर्ड फ्लू और सार्स जैसी महामारियां आप्रवास, व्यवसाय, पर्यटन और सैन्य अभियानों के जरिए बड़ी तेजी से विभिन्न देशों में फैली है।
- अनुमान है कि 2003 तक पूरी दुनिया में 4 करोड़ लोग एचआईवी-एड्स से संक्रमित हो चुके थे।
- इसमें दो तिहाई लोग अफ्रीका में रहते हैं।
- एबोला वायरस हैन्टाइवायरस और हेपेटाइटिससी जैसी कुछ नयी महामारियां उभरी है जिनके बारे में जानकारी कुछ खास नहीं है।

- टीबी, मलेरिया, डेंगू बुखार और हैजा जैसी पुरानी महामारियों ने औषध प्रतिरोधक रूप धारण कर लिया है इससे इनका उपचार कठिन हो गया है।



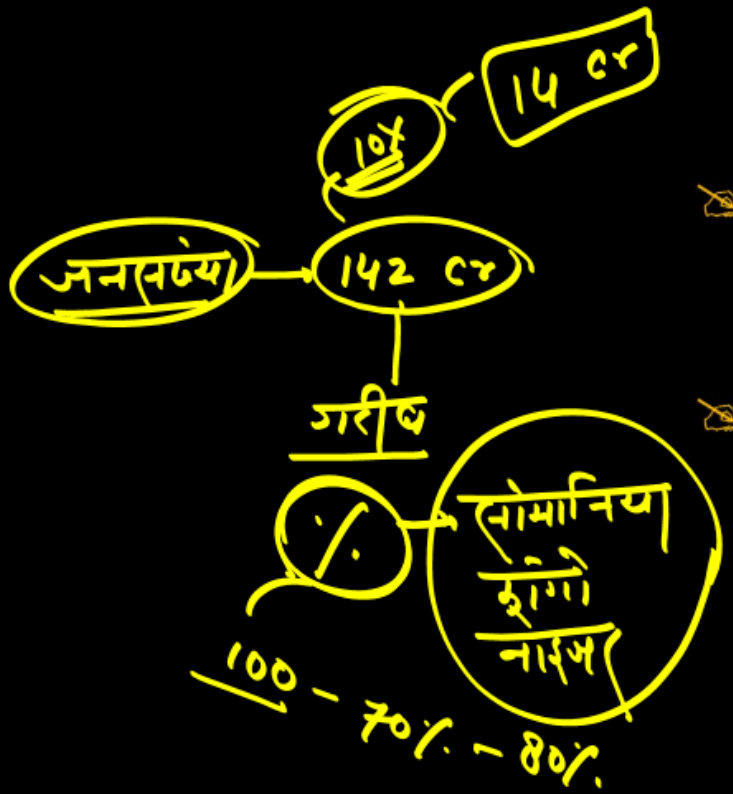
सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा - स्थानीय संदर्भों के अनुकूल परिवर्तनशील

- किसी मसले को सुरक्षा का मसला कहलाने के लिए एक सर्व स्वीकृत न्यूनतम मानक पर खरा उतरना जरूरी है।

जैसे - अगर किसी मसले से राज्य अथवा जनसमूह के अस्तित्व को खतरा हो तो उसे सुरक्षा का मसला कहा जा सकता है। चाहे इस खतरे की प्रकृति कुछ भी हो।

उदाहरण :-

- मालदीव को वैश्विक तापवृद्धि से खतरा।
- समुद्र तल को ऊँचा उठने से इसका ज्यादातर हिस्सा डूब गया।



- दक्षिणी अफ्रीकी देशों में एचआईवी-एड्स से गंभीर खतरा है यहां हर 6 वयस्क व्यक्ति में से एक इस रोग से पीड़ित है।
- 1994 में खांडा की तुत्सी जनजाति के अस्तित्व पर खतरा मंडराया क्योंकि प्रतिद्वन्द्वी हुतु जनजाति ने कुछ ही हफ्तों में लगभग 5 लाख तुत्सी लोगों को मार डाला।

सहयोगमूलक सुरक्षा :-

- सुरक्षा पर मडराते अपारंपरिक खतरों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से रणनीतियां तैयार की जाये।

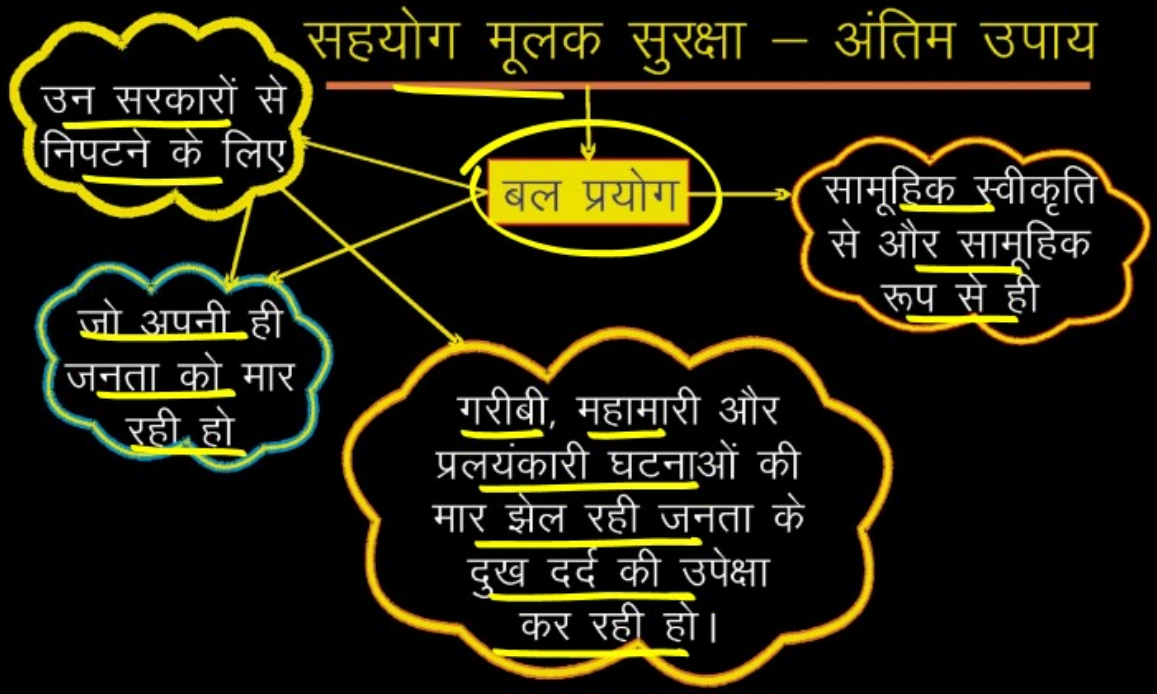
सहयोग -
- द्विपक्षीय
- क्षेत्रीय
- महादेशीय
- वैश्विक स्तर का

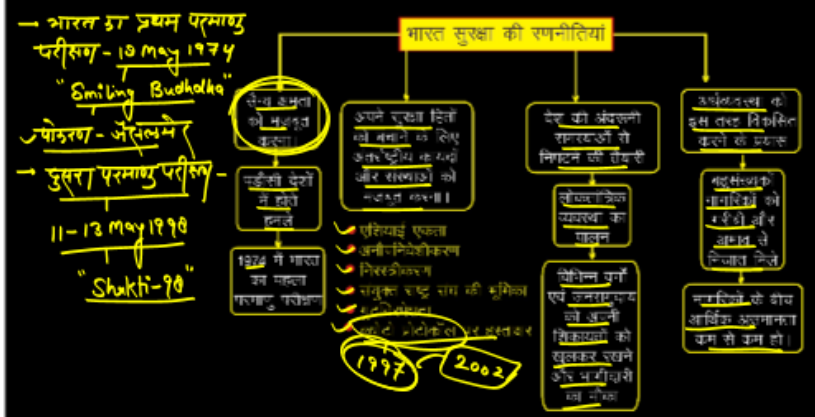
इस बात पर निर्भर कि खतरे की प्रकृति क्या है?

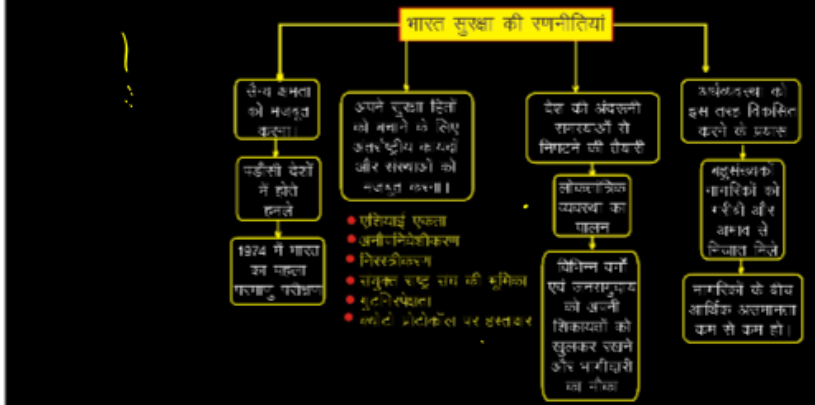
- सहयोगमूल सुरक्षा में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अन्य संस्थाएं जैसे
  - अंतर्राष्ट्रीय संगठन
    - विश्व स्वास्थ्य संगठन
    - विश्व बैंक
    - अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
    - संयुक्त राष्ट्र संघ आदि

- गेट्स व मिलिंडा फाउंडेशन
- Tata फाउंडेशन

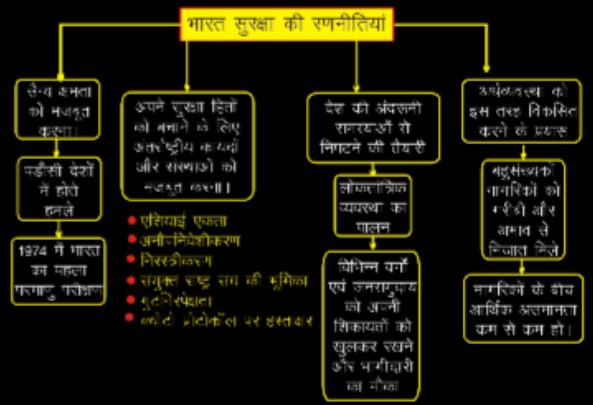
- स्वयंसेवी संगठन
  - एमनेस्टी इंटरनेशनल
  - रेड क्रॉस
  - दानदाता संस्थाएँ
  - चर्च और धार्मिक संगठन
  - मजदूर संगठन
  - सामाजिक और विकास संगठन आदि
- व्यवसायिक संगठन और जानी मानी हस्तियां शामिल हो सकती है।


सहयोग मूलक सुरक्षा – अंतिम उपाय
उन सरकारों से निपटने के लिए
बल प्रयोग
सामूहिक स्वीकृति से और सामूहिक रूप से ही
जो अपनी ही जनता को मार रही हो
गरीबी, महामारी और प्रलयंकारी घटनाओं की मार झेल रही जनता के दुख दर्द की उपेक्षा कर रही हो।


भारत सुरक्षा की रणनीतियां
सैन्य क्षमता को मजबूत करना।
पड़ोसी देशों से होने वाले हमले
1974 में भारत का पहला परमाणु परीक्षण
अपने सुरक्षा हितों को बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और संगठनों को मजबूत करना।
एशियाई एकता
अनीतिनियोजीकरण
निरस्त्रीकरण
संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका
गुटनिरपेक्षता।
न्यूक्लियर प्रोलिफरेशन पर हस्ताक्षर
देश की अंदरूनी सुरक्षा को लेकर सीमा पर तैयारी
लोकतांत्रिक व्यवस्था का पालन
पोखरण एवं जनसंख्या को अपनी शिकायतों को खुलकर रखने और भागीदारी का मौका
अर्थव्यवस्था को इस तरह विकसित करने के प्रयास
बहुसंख्यक नागरिकों को गरीबी और अभाव से निजात मिले
नागरिकों के बीच आर्थिक असमानता कम से कम हो।
→ भारत का प्रथम परमाणु परीक्षण - 18 May 1974
"Smiling Buddha"
→ पोखरण - जैसलमेर
→ दूसरा परमाणु परीक्षण - 11-13 May 1998
"Shakti-98"
1998
2002


भारत सुरक्षा की रणनीतियां
सैन्य क्षमता को मजबूत करना।
पड़ोसी देशों से होने वाले हमले
1974 में भारत का पहला परमाणु परीक्षण
अपने सुरक्षा हितों को बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और संगठनों को मजबूत करना।
एशियाई एकता
अनीतिनियोजीकरण
निरस्त्रीकरण
संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका
गुटनिरपेक्षता।
न्यूक्लियर प्रोलिफरेशन पर हस्ताक्षर
देश की अंदरूनी सुरक्षा को लेकर सीमा पर तैयारी
लोकतांत्रिक व्यवस्था का पालन
पोखरण एवं जनसंख्या को अपनी शिकायतों को खुलकर रखने और भागीदारी का मौका
अर्थव्यवस्था को इस तरह विकसित करने के प्रयास
बहुसंख्यक नागरिकों को गरीबी और अभाव से निजात मिले
नागरिकों के बीच आर्थिक असमानता कम से कम हो।


भारत सुरक्षा की रणनीतियां
सैन्य क्षमता को मजबूत करना।
पड़ोसी देशों से होने वाले हमले
1974 में भारत का पहला परमाणु परीक्षण
अपने सुरक्षा हितों को बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और संगठनों को मजबूत करना।
एशियाई एकता
अनीतिनियोजीकरण
निरस्त्रीकरण
संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका
गुटनिरपेक्षता।
न्यूक्लियर प्रोलिफरेशन पर हस्ताक्षर
देश की अंदरूनी सुरक्षा को लेकर सीमा पर तैयारी
लोकतांत्रिक व्यवस्था का पालन
पोखरण एवं जनसंख्या को अपनी शिकायतों को खुलकर रखने और भागीदारी का मौका
अर्थव्यवस्था को इस तरह विकसित करने के प्रयास
बहुसंख्यक नागरिकों को गरीबी और अभाव से निजात मिले
नागरिकों के बीच आर्थिक असमानता कम से कम हो।


भारत सुरक्षा की रणनीतियां
सैन्य क्षमता को मजबूत करना।
पड़ोसी देशों से होने वाले हमले
1974 में भारत का पहला परमाणु परीक्षण
अपने सुरक्षा हितों को बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और संगठनों को मजबूत करना।
एशियाई एकता
अनीतिनियोजीकरण
निरस्त्रीकरण
संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका
गुटनिरपेक्षता।
न्यूक्लियर प्रोलिफरेशन पर हस्ताक्षर
देश की अंदरूनी सुरक्षा को लेकर सीमा पर तैयारी
लोकतांत्रिक व्यवस्था का पालन
पोखरण एवं जनसंख्या को अपनी शिकायतों को खुलकर रखने और भागीदारी का मौका
अर्थव्यवस्था को इस तरह विकसित करने के प्रयास
बहुसंख्यक नागरिकों को गरीबी और अभाव से निजात मिले
नागरिकों के बीच आर्थिक असमानता कम से कम हो।